Rohtas Mahila College, Sasaram, 10.07.20
Dr. Aman Murmu, Dept of Psychology, B.A. Part I
Paper-I, 2019-20

(Topic - Observation method - निरीक्षण विधि)

यह मनोविज्ञान की एक महत्व विधि है। वुण्ट और टिचेनर ने चेतन अनुभूति को मनोविज्ञान की विषय वस्तु माना। लेकिन वाटसन ने इसका विरोध करते हुए चेतन अनुभूति के स्थान पर व्यवहार को मनोविज्ञान की विषय वस्तु माना और निरीक्षण विधि को अपनाया। निरीक्षण विधि का अर्थ ऐसी विधि से है जिसके द्वारा प्राणी के व्यवहार का अध्ययन भिन्न भिन्न परिस्थितियों में तटस्थभाव से किया जाता है। निरीक्षण करने वाला प्राणी के व्यवहार का अध्ययन उसी रूप में बार बार करता है जिस रूप में वह व्यवहार करता है। निरीक्षण के आधार पर जो आंकड़े प्राप्त होते हैं, उनकी सत्यता के जाँच के लिए वह बार बार अपने अध्ययन को दुहराता है। यदि हर बार एक ही तरह के आंकड़े मिलते हैं, तो उन्हें सत्य मान लिया जाता है। इससे निरीक्षणकर्ता या मनोवैज्ञानिक भी उस अध्ययन को दुहराते हैं और उसकी सत्यता को प्रमाणित करते हैं। निरीक्षण विधि में प्राणी की क्रियाओं का अध्ययन प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष दोनों रूप में किया जाता है। जैसे- हँसना, दौड़ना, रोना, भागना, आदि ऐसे व्यवहार हैं जिनका निरीक्षण बाहर से किया जा सकता है। इसे प्रत्यक्ष निरीक्षण कहते हैं। लेकिन प्राणी की कुछ ऐसी क्रियाएँ हैं जिन्हें बाहर से नहीं देखा जा सकता है। ऐसी क्रियाओं के निरीक्षण के लिए कुछ खास तरह के यंत्र की आवश्यकता होती है। जैसे — पाचन क्रिया का तेज या मंद होना, रक्तचाप का घटना बढ़ना, हृदय की धड़कन में कमी बेशी। इस प्रकार के निरीक्षण को अप्रत्यक्ष निरीक्षण कहते हैं।

यहाँ यह कह देना भी आवश्यक है कि निरीक्षण दो परिस्थितियों में किया जाता है। एक तो यह कि इसका व्यवहार स्वाभाविक परिस्थितियों में किया जाता है और दूसरा यह कि इसका व्यवहार नियंत्रित

Scanned with CamScanner

परिस्थिति में किया जाता है। स्वाभाविक परिस्थिति में वातावरण अनियंत्रित रहता है। वास्तविक अर्थ में इसे निरीक्षण विधि कहा जाता है। दूसरे शब्दों में जब किसी व्यवहार या घटना का अध्ययन स्वाभाविक अर्थात् अनियंत्रित परिस्थिति में किया जाता है तो इसे ही निरीक्षण विधि कहते हैं।

Scanned with CamScanner